



## 209139 - एक हिंदू प्रश्न कर रहा है कि : कौनसा धर्म बेहतर है, हिंदू धर्म या इस्लाम, और क्यों?

### प्रश्न

मैं हिंद महासागर के एक देश मॉरीशस का रहनेवाला हूँ। कृपया मुझे बतलाएं कि सबसे अच्छा धर्म कौनसा है, हिंदू धर्म या इस्लाम और क्यों? मैं स्वयं एक हिंदू हूँ।

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

सबसे अच्छा धर्म वह धर्म है जो यह प्रमाणित करने की क्षमता रखता हो कि वही वह धर्म है जिसे सृष्टिकर्ता अल्लाह सर्वशक्तिमान पसंद करता है, और उसे मानवता के लिए प्रकाश के तौर पर उतारा है, जो उन्हें उनके जीवन में सौभाग्य प्रदान करता है और उन्हें उनके परलोक के जीवन में मोक्ष प्रदान करेगा। तथा प्रमाण या सबूत के लिए जरूरी है कि वह उज्ज्वल और स्पष्ट हो, लोगों को उसमें कोई शक न हो, और लोगों के अंदर उसके समान चीज जलाने की शक्ति और सामर्थ्य न हो। क्योंकि दज्जाल लोग अपने झूठ पर जो गिरे हुए और कमजोर प्रमाण प्रस्तुत करते हैं उन्हें अल्लाह सर्वशक्तिमान भली-भांति जानता है। इसलिए अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपने पैगंबरों और ईशदूतों का व्यापक व समग्र चमत्कारों और प्रत्यक्ष लक्षणों द्वारा समर्थन करने का चयन किया जो लोगों के लिए इस व्यक्ति की सत्यता को प्रमाणित करते हैं जिसकी ओर उसके पालनहार की ओर से वह्य (ईशवाणी) की गई है, चुनाँचे लोग उसमें विश्वास रखते हैं और उसका पालन करते हैं।

इस प्रकार इस्लाम के संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रभावशाली व उज्ज्वल चमत्कारों के साथ आए, जो बहुत अधिक हैं जिनके बारे में बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखी गई हैं। लेकिन उनमें सबसे महान और प्रधान दिव्य कुरआन है, जिसने अरबों को चुनौती दी है कि वे कोई ऐसी चीज लाकर दिखाएं जो पूर्णता के सभी पहलुओं में उसके समान हो। क्योंकि उसमें शब्दांडंबरपूर्ण (आलंकारिक) चमत्कार पाया जाता है, चुनाँचे कुरैश के वाक्पटु सुवक्ता – जबकि वे सभी इतिहासकारों की गवाही के अनुसार वाग्मिता और सुभाषण के शिखर पर पहुँचे हुए थे – इसके समान कोई चीज प्रस्तुत नहीं कर सके। तथा इसमें वैज्ञानिक चमत्कार भी है, चुनाँचे कुरआन करीम – इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत – ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है जिस तरह की चीजें उस ज़माने में किसी मनुष्य के लिए प्रस्तुत करना संभव नहीं था सिवाय इसके कि उसकी ओर वह्य (ईश्वरीय वाणी) की जाती हो। तथा इसमें प्रोक्षसे संबंधित चमत्कार पाया जाता है, चुनाँचे कुरआन ने पहले और बाद में आने वालों के इतिहास के बारे में बात किया है, जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतिहास का पूर्वज्ञान नहीं था, बल्कि उस देश में कोई ऐसा व्यक्ति था ही नहीं जो वस्तुतः इसका ज्ञान रखता हो सिवाय अहलेकिताब (यानी

यहूदियों व ईसाइयों) के कुछ अवशेष लोगों के। तथा इसमें विधायी चमत्कार भी है जो एक संपूर्ण और व्यापक प्रणाली में प्रकट होता है, जिसका आरंभ नैतिकता, व्यक्तिगत शिष्टाचार, परिवार और पर्सनल स्थितिके प्रावधानों से होता है।

जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और सामुदायिक प्रावधानों को संगठित करता है। जो मानव जाति के बीच न्याय और स्वतंत्रता के स्थापना करता है, तथा संसार, प्रोक्ष और परलोक के अवधारणाओं, और सौभाग्य और दुर्भाग्य के अवधारणाओं को प्रमाणित करता है। ये सारी चीजें एक निरक्षर आदमी से जारी होती हैं जो पढ़ना लिखना नहीं जानता है, लेकिन उसके दोस्तों से पहले उसके दुश्मन उसकी सच्चाई और अमानतदारी की गवाही देते हैं। वह इस कुरआन को ग्रहण करता है ताकि इसके द्वारा विशाल इस्लामी सभ्यता की स्थापना करे जिसका विस्तार चौदह सदी से अधिक समय तक रहता है।

हमारे विचार में सबसे अच्छा धर्म, वह धर्म है जो आपको केवल एक शक्ति से जोड़ता है, यह वही शक्ति है जिसने आपको पैदा किया और आपको अनुग्रह प्रदान किया है, और वह आकाशों और धरती की बागडोर का मालिक है। यह वही शक्ति है जो आपके दूसरे जीवन में आप पर दया करेगी और आपके साथ होगी यदि आप उस पर ईमान लाएँ और अच्छा काम किया। वह अल्लाह सर्वशक्तिमान है, जो एक, अकेला और बेनियाज़ (निस्पृह) है। और वह (धर्म) आपको उसके अलावा किसी अन्य से नहीं जोड़ता है, क्योंकि उसके अलावा हर चीज़ रचना, कमज़ोर और अल्लाह महिमावान की ज़रूरतमंद है। इस तरह मनुष्य सत्य अल्लाह के सिवाय गुलामी के समस्त बंधनों से मुक्त हो जाता है, तथा भूमि संपत्कों से छुटकारा पा जाता है जो कि मानवता के लिए अपमान, अत्याचार, उत्पीड़न और वर्चस्व के कारण बनते हैं। यह सब एक झूठे धर्म के नाम पर किया जाता है जो वर्ग व्यवस्था (वर्गभेद) को प्रमाणित करता है। (देखिए : डॉ. आजमी की किताब “दिरासात” का अध्याय “हिन्दू समाज में वर्गीकरण”), तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान के अलावा की गुलामी को स्वीकार करता है, बल्कि जानवरों जैसे गाय इत्यादि की पूजा को स्वीकारता है। चूनाँच वह मनुष्य जिसे अल्लाह ने बुद्धि और आत्मा से सम्मानित किया है जो अल्लाह सर्वशक्तिमान की आत्मा से है, उस चीज़ का बंदी बन जाता है जिसे वह उन जानवरों में से पवित्र, प्रतिष्ठित और सम्माननीय करार देता है, हालांकि वह उसके लिए लाभ और हानि के मालिक नहीं है, बल्कि स्वयं अपने लिए भी किसी चीज़ के मालिक नहीं, दूसरे की बात तो बहुत दूर है।

सबसे अच्छा धर्म वह है जो एक ऐसी संपूर्ण प्रणाली रखता है जो लोक और प्रलोक में खुशी व सौभाग्य के रास्तों की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन करता है; क्योंकि धर्मों का उद्देश्य सौभाग्य की प्राप्ति है, और उसे अल्लाह सर्वशक्तिमान के मार्गदर्शन के बिना प्राप्त करना संभव नहीं है। और इस भरपूर सौभाग्य और सुख को प्राप्त करने के लिए, इस्लाम में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं में हर प्रकार का मार्गदर्शन पाया जाता है। जब मुसलमानों ने प्रथम युग में इस मार्गदर्शन को अपनाया, तो धरती को हर भलाई, न्याय और निष्पक्षता (इंसाफ) से भर दिया, और जब उन्होंने इससे उपेक्षा किया तो उनसे वेलाभ छिन गए जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किये थे।

सबसे अच्छा धर्म वह है जो कालानुक्रमिक क्रम में सबसे नवीनतम है, अपने से पूर्व सत्य धर्मों की पुष्टि करने वाला, कुछ

पूर्वविधानों को मंजूरी देनेवाला है जो उसके फैलाव के समय और स्थान के अनुसार अवतरित हुए थे, तथा उन धर्मों में वर्णित शुभसूचनाओं को सुनिश्चित करनेवाला है, जो (शुभसूचनाएं) एक ऐसे ईशदूत के बारे में सूचना देती हैं जो अंतिम काल में अवतरित होगा, और उसकी निशानियों और गुणों का वर्णन करती हैं। चुनाँचे कुरआन करीम ने हमें सूचना दी है कि सभी पूर्व ईशदूत और पैगंबर इस बात को जानते थे कि अंतिम काल में एक पैगंबर भेजा जाएगा, जिसका नाम मुहम्मद है, अल्लाह सर्वशक्तिमान उस पर संदेशों का अंत कर देगा। अल्लाह तआला का फरमान है :

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ

[سورة آل عمران: 81]

“और याद करो जब अल्लाह तआला ने पैगंबरों से अहद व पैमान (वचन) लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिकमत दूँ, फिर तुम्हारे पास वह पैगंबर आए जो तुम्हारे पास की चीज़ को सचबताए तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे। फरमाया : क्या तुम इसके इकरारी हो और इस पर मेरा ज़िम्मा (वचन) ले रहे हो ? सब ने कहा कि हमें स्वीकार है, फरमाया : तो अब गवाह रहो और स्वयं मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ।” (सुरत आल-इम्रान 3: 81)

यही कारण है कि हम पिछले धर्मों की अविकृत अवशेषों में इस पवित्र पैगंबर के बारे में स्पष्ट शुभसूचनाएं पाते हैं। चुनाँचे तौरात और इंजील इन शुभसूचनाओं से भरे हैं, लेकिन उन्हें यहाँ उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि हमारे लिए यहाँ महत्वपूर्ण हमारे ईशदूत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में वह स्पष्ट शुभसूचनाएं और भविष्यवाणियाँ हैं जो हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रंथों में वर्णित हुई हैं। वह शुभसूचनाएं भविष्यवाणियाँ आवश्यक रूप से इन सभी पुस्तकों की सत्यता और सुरक्षा का संकेत नहीं देती हैं, बल्कि उनमें प्रमाणित कुछ सच बातों को इंगित करती हैं, जो उन पैगंबरों और ईशदूतों से उद्धृत हैं जो प्राचीन समय में भेजे गए थे।

इन ग्रंथों को आदरणीय डॉ. मुहम्मद ज़िया उर रहमान आज़मी ने अपनी बहुमूल्य पुस्तक “दिरासात फिलयहूदिय्या वल मसीहिय्या व अदयानिल हिंद” (पृष्ठ 703-746) में उल्लेख किया है, विशेषकर डॉ. साहब हिंदुस्तान से संबंध रखते हैं और उन पुस्तकों को पढ़ने में महारत रखते हैं जिनका मेरे ज्ञान के अनुसार अभी तक अरबी भाषा में अनुवाद नहीं हुआ है।

1- “उस समय “शम्भल” गांव [अर्थात् शांति वाला नगर], में एक आदमी के पास जिसका नाम “विष्णु व्यास” (अब्दुल्लाह यानी अल्लाह का दास), होगा और वह विनम्र हृदय वाला होगा, उसके घर (कल्क) [पापों और गुनाहों का निवारक], पैदा होगा।” [भागवत पुराण], (2/18) .

यह बात सर्वज्ञात है कि हमारे ईशदूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिता का नाम (अब्दुल्लाह) है, और



कुरआनकरीम में मक्काका नाम “अल-बलदुल अमीन” यानी शांतिवाला शहर है।

2- “(विष्णु व्यास)के घर उनकी पत्नी(सोमती) [सुरक्षाव शांतिवाली, आमिना]से (कल्क)पैदा होगा।” (कल्कपुराण 2/11).

यह बात भीसर्वज्ञात है किहमारे ईशदूत मुहम्मदसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की माँका नाम आमिना बिनतवहब है।

3- “वह चाँद केप्रकट होने केबारवहें दिन एकऐसे महीने मेंपैदा होगा जिसकानाम (माधवह) अर्थातऐसा महीना जो दिलोंको प्रिय है औरवह रबीअ (बसंत) कामहीना है।” (कल्कपुराण 2/15).

पैगंबर कीजीवनी की पुस्तकेआप सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमके जन्म की तिथिके वर्णन से भरीपड़ी हैं, और वह रबीउलअव्वल की बारहवीतारीख में है, यद्यपिइसमें मतभेद है।

4- “(कल्क) पाँचगुणों से विशिष्टहोगा :

1. (PRAGYA-प्रज्ञा) भविष्यके बारे में सूचनादेगा।

2. (CULINATA-कुलीनता)अपनी जातिमें सबसे कुलीन।

3. (INDRIDAMAN-इन्द्रदमन)अपनी आत्मापर नियंत्रण रखनेवाला।

4. (SHRUT-श्रुत)उसकी ओरवह्य की जाएगी।

5. (PRAKRAM-प्रक्रम)बलवान, मजबूत।

6. (ABHU BHASHITA-अभु भाषिता)अल्पभाषी।

7. (DAN-दान) दानशील।

8. (KRITAGYATA-कृतज्ञता)उपकारके प्रति आभारी।

यह हमारे नायकमुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमके उन गुणों औरविशेषताओं का कुछअंश है जिनको आपसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जाननेवालेसभी अरब के लोगोंने स्वीकारा है, चाहे वेइस्लाम में प्रवेशकिए हों या अपनीनास्तिकता पर बनेरहे हों।

5- “वह घोड़े कीसवारी करेगा, उससे प्रकाशनिकलेगा। उसकेप्रताप और सुंदरताकी कोई समानतानहीं कर सकता।वह खत्ना कियाहुआ होगा, लाखों अत्याचारियोंऔर नास्तिकों कोफांसी देगा।” भागवत पुराण12-2-20,



हिन्दुओंके यहाँ खतानहीं होता है, बल्किवह मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमकी उम्मत (अनुयायियों)के पुरूषों काएक इस्लामी कर्तव्यहै।

6- "वह अपने चारसाथियों की मददसे शैतान का नाशकरेंगे, और स्वर्गदूत(फरिश्ते) उनकीलड़ाइयों में उनकासहयोग करने केलिए धरती पर उतरेंगे।" [कल्कि पुराण2/5-7]।

हमारे पैगंबरसल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम के चारसाथी, वे खुलफा-ए-राशेदीनहैं जिन्होंनेआपके बाद शासनकिया और इस्लामके विद्वानों कीइस बात पर सर्वसहमतिहै कि वे हमारेपैगंबर सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमके बाद सबसे अच्छेमानव हैं।

7- "वह अपने जन्मके बाद पहाड़ परजायेंगे ताकि परशुराम[अर्थातमहान शिक्षक]से शिक्षाप्राप्त करें।फिर वह उत्तर कीओर जायेंगे, फिर वहअपने जन्मस्थानकी ओर वापस लौटआयेंगे।" [कल्कि पुराण]।

नबी सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमइसी तरह थे, आप हिरानामी गुफा मेंएकांत में रहाकरते थे यहाँ तककि जिब्रील अलैहिस्सलामआपके पास वहुलेकर आए। फिर आपने उत्तर की दिशामें मदीना मुनव्वराकी ओर हिजरत किया, फिर आपएक विजेता के रूपमें मक्का वापसआए।

8- "लोग उसकेशरीर से निकलनेवाले सुगंध सेमुग्ध हो जाएंगे।उसके शरीर का पवित्रसुगंध हवा मेंमिश्रित होकर, आत्माओंऔर मनो को कोमलकरदेगा।" [भागवतपुराण 2/2/21]।

9- "सबसे पहलेजिसने वध कियाऔर बलिदान दियावह अहमदू है, तो वह सूर्यके समान हो गया।" [साम वेद 3/6/8]।

10- "एक आध्यात्मिकशिक्षक अपने सम्मानितसाथियों के साथआएगा, और लोगों के बीचमहामद के नाम सेप्रसिद्ध होगा।राजकुमार उसकायह कहते हुए स्वागतकरेगा : ऐ रेगिस्तानके निवासी! शैतानको पराजित करनेवाले, चमत्कारवाले, हर बुराई से पवित्र, सत्य परस्थापित, अल्लाह केज्ञान में दक्ष, उससे प्यारकरनेवाले, तुझे सलाम(तुझ पर अल्लाहकी शांति हो), मैं आपकादास हूँ, मैं आपके पैरोंके नीचे जीता हूँ।"

[भविष्य पुराण3/3/5-8]।

11- "इन चरणोंके दौरान, जब मानव जातिके लिए सामूहिकभलाई के प्रकटहोने का समय आ जाएगा, तो सत्यआगे बढ़ जाएगा, और (मुहम्मद)के प्रकट होन सेअंधकार मिट जाएगा, और समझऔर ज्ञान का प्रकाशउदय होगा।" [भागवतपुराण 2/76]।

इन ग्रंथोंमें स्पष्ट रूपसे (मुहम्मद) या(अहमद) के नाम काउल्लेख किया गयाहै, और यह दोनोंआप सल्लल्लाहुअलैहि व

सल्लमके नामों में सेहैं। अल्लाह तआलाका कथन है :

وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ

[4 : الصف]

”औरएक रसूल की शुभसूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगाएउसका नाम अहमदहोगा।” (सूरतुस-सफ : 6).

12- ”अग्नि देवीउज्ज्वल कानूनोंवाली, हमने तुझेधरती के ऊपर बलिदानपेश करने के लिएबनाया है।” [ऋग्वेद3,29,4]

13-”तथा[अथर्ववेद] और [ऋग्वेद] में – विभिन्न औरअनेक स्थानों पर- (नराशंस) [अर्थात्प्रशंसित मनुष्य]की शुभसूचनावर्णित है। उसकेगुणों के वर्णनमें आया है कि : वहपृथ्वी पर सबसेसुंदर व्यक्तिहोगा, उसका प्रकाश घरघर में प्रवेशकरेगा, वह लोगों को पापोंऔर कुर्मों सेपवित्र करेगा।वह ऊँट की सवारीकरेगा। उसकी बारहपत्नियाँ होंगी... हे लोगो ! सुनो, (नराशंस)का चर्चा बढ़ जाएगा... (नराशंस)की प्रशंसा कीजाएगी, वह 60,090 लोगों के बीचसे हिजरत करेगा(विस्थापित होगा)... मैंने (महामहे)को एक सौ शुद्धसोने के सिक्के, दस तस्बीहें, और तीनसौ घोड़े प्रदानकिए हैं।”

पैगंबर कीजीवनी पर लिखीगई पुस्तकों मेंउपर्युक्त संख्यामें आप सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमकी पत्तियों केनाम गिनाए गए हैं।

14- ”एक पवित्रचरित्र वाला व्यक्तिरात के अंधेरेमें सिंध के राजा(राजा भूज) के पासआया और उससे कहा : हे राजा ! आपका धर्म(आर्य धर्म) भारतमें सभी धर्मोंपर सर्वोपरि रखताहै, लेकिनमहानतम पूज्य केआदेश से, मैं एक ऐसेआदमी के धर्म कोआधिपत्य प्रदानकरूँगा जो हर पवित्रचीज को खाएगा, वह खत्नाकिया हुआ होगा, उसके सिरपर लटकनेवाली लटया सिर पर बंधीहुई चोटी नहींहोगी, उसकी लंबी दाढ़ीहोगी। वह एक बड़ीक्रांति पैदा करेगा। लोगों में अज्ञानदेगा। वह, सूअर के अलावा, हर पवित्रचीज खाएगा। उसकाधर्म सभी धर्मोंको मंसूख (निरस्त)कर देगा, हमने उनकानाम मुसलाई रखाहै। महान पूज्यने इस धर्म की उनकीओर वह्य (ईश्वरीयवाणी)की है।” [भविष्य पुराण3/3/23-27]

हम कहते हैंकि नमाज़ के लिएअज्ञान देना, और सूअरके मांस से परहेज़करना इस्लामी शरीअतके सबसे प्रमुखविशेषताओं मेंसे है। और उसकेमाननेवालों कानाम (मुसलमान) है, (मुसलाई)नहीं है। लेकिनवे एक ही मूल वालेकरीब शब्द हैं।

हम आपसे यहभी कहते हैं किहिन्दू धर्म केसिद्धांतकारोंके कथन के अपेक्षानुसार, आपके लिएइस्लाम धर्म कीआस्थाओं को धारणकरने और पैगंबरमुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लमद्वारा लाए हुएधर्म को अपनानेकी अनुमति है ; क्योंकि- उनके दृष्टिकोणमें – हिन्दू धर्मगैर-भेदभाव (अपक्षपात)और सत्य के खोजसे विशिष्ट है, और यह आपकेहिन्दुत्व को प्रभावितनहीं करेगा, चाहे आपअल्लाह में विश्वासरखें या न रखें। महत्वपूर्ण यहहै कि आप सत्य केलिए अपनी तलाशजारी रखें।



भारतीय नेता “गांधी” का कहना है :

“हिन्दूधर्म का यह सौभाग्य है कि उसका कोई प्रमुख सिद्धांत नहीं है। यदि मुझसे उसके बारे में प्रश्न किया जाए तो मैं कहूँगा कि : उसका सिद्धांत पक्षपात न करना और अच्छे ढंग से सत्य की खोज करना है। रही बात सृष्टिकर्ता के अस्तित्व में विश्वास रखने या न रखने की, तो यह दोनों समान हैं। और किसी हिन्दू आदमी के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि वह सृष्टिकर्ता में विश्वास रखे। वह एक हिन्दू है, चाहे वह विश्वास रखे या विश्वास न रखे।”

तथा उनका यह भी कहना है कि :

“हिन्दूधर्म का सौभाग्य है कि वह हर सिद्धांत (आस्था) से अलग है। परन्तु वह अन्य धर्मों के सभी मौलिक बातों और प्रमुख सिद्धांतों को घेरे हुए है।” उनकी पुस्तक “हिन्दूधर्म” (HINDU DHARM) से समाप्त हुआ।

इसे मैंने डॉ. आजमी की पुस्तक “दिरासात फिल यहूदिय्या वल मसीहिय्या व अदयानिल हिंद” (यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और भारत के धर्मों का अध्ययन) (पृष्ठ 529-530) से उद्धृत किया है।

आप इसे इस्लाम का अध्ययन करने, उसकी अच्छाइयों और विशेषताओं में विचार करने, और अन्य सभी धर्मों पर उसकी विशिष्टताओं को तलाश करने के लिए अपना प्रारंभिक बिंदु क्यों नहीं बना लेते। क्योंकि इस्लाम अपने पूर्ववर्ती सभी धर्मों को मंजूरी देने वाला है। और इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अपने पूर्व सभी ईशूतों और पैगंबरों की शुभसूचना हैं। यह मामला बहुत गंभीर और खतरनाक है। क्योंकि कुरआन करीम मोक्ष के पथ को केवल एकेश्वरवाद के धर्म, इस्लाम के मार्ग में सीमित करता है। अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ

[آل عمران : 85].

“और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा कोई अन्य धर्म ढूंढेगा, तो वह (धर्म) उससे स्वीकार नहीं किया जायेगा, और आखिरत में वह घाटा उठाने वालों में से होगा।” (सूरत आल-इम्रान : 85).

और अल्लाह ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर